श्री शौरीपुर- बटेश्वर दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र-एक परिचय

यमुना के पाटन तट पर बसी हुई, अनेक तीर्थंकरों की तप: स्थली तथा भगवान श्री नेमिनाथ की गर्भ व जन्म भूमि श्री शौरीपुर नगरी को नमन करता हूँ।

आगरा जनपद के मुख्यालय से लगभग 70 किलो मीटर दूर, दक्षिण-पूर्व में यमुना के रम्य तट पर विराजमान इस पावन नगरी की आयु 5000 वर्ष से भी अधिक है। भगवान श्री नेमिनाथ की जन्मभूमि, ज्ञान भूमि के साथ, यह मुनि श्री यम, मुनि श्री धान्य एवं मुनि श्री विमलासुत की निर्वाण-भूमि भी हैं। कहते हैं- श्री नेमि प्रभु के जन्म के पूर्व भी यह नगरी धन-धान्य से परिपूर्ण थी। भगवान श्री नेमिनाथ के जन्म से 15 मास पूर्व से जन्मोत्सव पर्यन्त नित्य तीनों समय साढ़े तीन करोड़ रत्नों की वर्षा कुबेर द्वारा की गई। आठों सिद्धियों व नवनिधियों से परिपूरित इस नगरी में दुख और दारिद्र का नाम तक नहीं था। अनेक मुनियों की तप: स्थली तथा ज्ञान स्थली होने के कारण यह भूमि ''सिद्धक्षेत्र'' के गौरव से भी अलंकृत हुई।

महापुराण तथा हरिवंशपुराण में इस शूरसेन जनपद का विवरण है। हरिवंश के प्रवर्तक राजा हरि के वंशज राजा वसु थे उनकी संतति में राजा यदु ने यदुवंश संस्थापित किया। उनके पुत्र थे नरपति। नरपति के प्रतापी पुत्र शूर के द्वारा प्रतिष्ठापित इस जनपद का नाम शूरसेन पड़ा। शौरीपुर शूरसेन जनपद की राजधानी थी। शूरसेन के दो पुत्र थे- अन्धकवृष्णि तथा भोजकवृष्णि। अन्धकवृष्णि को उत्तराधिकार में शौरीपुर का प्रदेश मिला और भोजकवृष्णि को मथुरा का। राजा अन्धकवृष्णि के ज्येष्ठ पुत्र महाराजा समुद्रविजय की महारानी शिवादेवी की कुक्षि से श्री नेमिनाथ (उपनाम श्री अरिष्टनेमि) का श्रावण शुक्ल षष्ठी को शौरीपुर में जन्म हुआ। नेमिनाथ भावी तीर्थंकर थे, इसलिये शौरीपुर में श्री नेमिनाथ के जन्म से पन्द्रह महीने पहले से, दिन में तीन समय रत्नों और स्वर्ण की वर्षा हुई। राजा अन्धकवृष्णि के दस पुत्र थे, जो दशार्ह कहलाये, उनकी दो पुत्रियां भी थीं कुन्ती और माद्री। दशार्हों में समुद्रविजय सबसे बड़े और वसुदेव सबसे छोटे थे। यह मान्यता है कि कुमार वसुदेव की शबारात शौरीपुर से मथुरा गई थी। तीर्थंकर नेमिनाथ समुद्रविजय के और नारायण श्रीकृष्ण वसुदेव के पुत्र थे। इस प्रकार तीर्थंकर नेमिनाथ और श्रीकृष्ण सगे चचेरे भाई थे। कुन्ती और माद्री का विवाह कुरु राजकमार पांडु से हुआ था। पांचों पाण्डवों में युधिष्ठर, भीम तथा अर्जुन कुन्ती के पुत्र थे और नकुल तथा सहदेव माद्री के । दानी कर्ण भी कुन्ती का पुत्र था। इस प्रकार पाण्डव बन्धु श्रीकृष्ण तथा श्री नेमिनाथ के फेरे भाई थे। महाभारत युद्ध में बलभद्र जी ने कौरव अथवा पाण्डव किसी भी पक्ष का समर्थन नहीं किया था, तब वे एकान्तवास हेतु शौरीपुर में ही रहे थे, इसलिए शौरीपुर की महिमा और बढ़ जाती है।

श्री शौरीपुर क्षेत्र की प्राचीन समृद्धि निर्विवाद है। इतिहास रत्न डा0 ज्योति प्रसाद के अनुसार 19वीं सदी के पूर्वार्ध में कर्नल टॉड और उसी सदी के अन्तिम चरण में जनरल कनिंघम और उनके सहायेागी कार्लायल ने यहां के खण्डहरों का सर्वेक्षण किया था और सिद्ध किया था कि प्राचीन काल

में यह नगरी अत्यन्त समृद्धि शाली थी। मध्यकाल में 19वीं सदी तक यहां दिगम्बर जैन भट्टारकों की गद्दी रही है। उनकी धार्मिक चर्चाओं और सिद्धियों से जनता बहुत प्रभावित थी। मन्दिर (बरूवा-मठ) तथा शांखध्वज जिनालय में विराजमान श्री नेमिनाथ, श्री वृषभनाथ, श्री विमलनाथ, श्री चन्द्रप्रभु के महामनोज्ञ जिनबिम्ब चित्त को भक्ति या अनुराग से परिपूर्ण कर देते हैं। पंचमठी की पांचों टोकों में पंचमगति प्राप्त मुनियों के चरण -चिन्हों की वन्दना कर अविस्मरणीय सुख -शान्ति का अनुभव होता है और होता है अपूर्व पुण्यबंध।

शौरीपुर के वैभवकाल में बटेश्वर शौरीपुर का एक उपनगर था। शनैः-शनैः काल के परिणमन से शौरीपुर वीरान होता गया और बटेश्वर का महत्व बढ़ने लगा। बटेश्वर, शौरीपुर जाते समय मार्ग में 2 कि0मी0 पहले पड़ता है व ग्राम पंचायत का मुख्यालय हैं। तत्कालीन भदावर राज्य के अधि पति महाराज बदन सिंह थे। महाराज बदन सिंह स्वयं विद्वान थे तथा विद्वानों व सिद्ध पुरुषों का आदर करते थे। शौरीपुर के वीरान हो जाने के कारण भट्टारक जी को बटेश्वर में एक दिगम्बर जैन मन्दिर की आवश्यकता महसूस हुई। उनसे प्रभावित महाराजा बदन सिंह ने मंदिर-निर्माण की में पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। विरोधियों की चाल के फलस्वरूप मंदिर के लिए प्राप्त भूखण्ड जमुना के मध्य धार में मिला। भट्टारक जी इससे तनिक भी विचलित नहीं हुए और उन्होंने अपने द्वारा अभिमंत्रित शिलाओं को यमुना की मध्यधार में स्थापित कराया और सं0 1878 में जैन मंदिर का निर्माण किया। प्रामाणिक आख्यानों के अनुसार, यमुना जी ने उस भूखण्ड से हटकर अपनी दिशा ही बदल दी। यह मंदिर प्राचीन वास्तुकला तथा वास्तु विज्ञान का जीता-जागता नमूना है। जिसकी दो मंजिलें यमुना तल के नीचे और दो ऊपर हैं। आज सारा विश्व उन महापुरुषों के सत्कृत्यों पर नतमस्तक है। मंदिर जी में कृष्ण पाषाण निर्मित साढ़े पांच फुट अवगाहना वाली दश-ताल प्रमाण, महामनोज्ञ, त्रिभुवन मोहिनी, अत्यन्त अतिशयवान भगवान श्री 1008 अजितनाथ स्वामी की पद्मासन मूलनायक प्रतिमा विराजमान है। यह प्रतिमा सम्वत् 1224 (सन् 1167) सोमवार वैशाख बदी 7 को महोबा में राजा परिमर्ददेव के शासनकाल में श्रावक श्रेष्ठ जल्हण द्वारा प्रतिष्ठित की गई थी। इतिहास प्रसिद्ध रण-बांकुरे शूरवीर आल्हा और ऊदल का समयकाल भी महोबा में राजा परिमर्ददेव (राजा परिमाल) का शासनकाल है। यह प्रतिमा लोक मानस में ''मणियादेव'' के नाम से भी प्रसिद्ध है।

सन् 1924 में भट्टारकों के अन्तिम उत्तराधिकारी यति श्री रामपाल